Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY, 2021, VOL-9/45

विदर्भ प्रान्त (वर्धा) मे कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के द्वारा जल संरक्षण मे सहयोगात्मक कदम

मिक्की कुमारी

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वधालय वर्धा, एम फिल शोधर्थी (समाज कार्य) सत्र -2019 -2021

Paper Received On: 25 MAY 2021
Peer Reviewed On: 30 MAY 2021
Published On: 1 JUNE 2021

Abstract

वर्तमान समय मे जल संकट कि स्थिति बहुत ही गंभीर रूप धारण कर ली है। आज भारत ही नहीं तीसरी दुनिया के अनेक देश भी सूखा और जल संकट कि पीड़ा से त्रस्त है| जल की आपूर्ति नहीं होने के कारण हिंसक घटनाएं भी देखने को मिल रहा है| ऐसा लग रहा है कि जल को लेकर तृतीय विश्व युद्ध होने की संभावना है| इसलिए हमलोग को जल संरक्षण करने की जरूरत है। जल के एक-एक बूंद बचने कि जरूरत है ताकि वर्तमान तथा आने वाले दिनों में जल संकट का सामना न करना पड़े। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में वर्धा एक जिला है जो एक सूखा ग्रस्त क्षेत्र है| यहाँ गर्मियों में औसत तापमान 50 डिग्री सेल्सियस से भी ऊपर चला जाता है| महाराष्ट्र हर चीज़ में अमीर राज्य है लेकिन पानी के लिए इसे गरीबी का सामना करना पड़ता है | मार्च से जून तक याहाँ स्थिति बहुत ही भयावह रहती हैं| लोग पानी के लिए एक-एक बूंद के लिए तरस जाते है यहाँ पर पानी का संकट बहुत है । यहाँ वर्षा बहुत कम होती हैं| वर्धा मुख्यत कृषि प्रधान क्षेत्र है| यहां की आर्थिक स्थिति कृषि पर ही निर्भर करता हैं| याहाँ के किसानों को खेती करने के लिए समय से पानी उपलब्ध नहीं हो पाते हैं| जिसके कारण किसान के फ़सल के उत्पादन और गुणवत्ता दोनों ही प्रभावित होता है। आये दिन यहाँ के किसान आत्महत्या करते हैं। इन सारी समस्याओं का एक ही समाधान है जल का संरक्षण करने पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है| कमलनयन जमनालाल बजाज फाऊंडेशन पिछले 10 सालो से जल प्रबंधन के लिए काम कर रहा है जिसके कारण वर्धा जिला के जल स्तर में काफ़ी सुधार आया है | किसान को अब खेती के लिए समय से पानी उपलब्ध हो जाता हैं| जो भूमि उचाई पर स्थित है अब वहा भी लिफट एरिगेशन के माध्यम से खेतों की सिंचाई हो जाती हैं| कमलनयन जमनालाल बजाज फाऊंडेशन पिछले 10 साल में वर्धा जिला के लिए जल संरक्षण के लिए जो काम किया है क्या वह वास्तविक रूप में जल की कमी को पूरा करने में खरा उतर पाया है| अब वर्धा जिला में जल स्तर की स्थिति क्या है? क्या अब किसानों को खेती के लिए समय से पानी मिल पता है? किसान की फसल की गुणवतता और उत्पादन में कितना सुधार हुआ है| जल संरक्षण को लेकर लोगो में कितनी जागरूकता फैली है, वर्धा जिला में जल की आपूर्ति के बाद याहां के लोगों का सामाजिक आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति में कितना सुधार हुआ है| किसान की आत्म हत्या की गति कितनी कम हुई है| जल संरक्षण के लिए जो काम किया गया है| इसका सकारात्मक प्रभाव क्या- क्या रहा है यह जाने की कोशिश इस अनुसंधान में किया गया है |

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रस्तावना (introduction)

जमनालाल कमलनयन के पिता जी और शिशिर बजाज के दादा जी है। इन दोनों का जन्म स्थल महाराष्ट्र राज़्य के वर्धा में है। जमनालाल एक परोपकारी व्यक्ति थे ,इन्होंने समाज और समुदाय के गरीब, कमज़ोर तथा वंचित लोगों के समाजिक -आर्थिक विकास को मुख्यधारा में जोड़ना है। शिशिर बजाज ने अपने दादा जी कमलनयन तथा पिताजी जमनालाल बजाज के स्मृति में इस संगठन की स्थापन किए। शिशिर बजाज संगठन के अध्ययक्ष है। संगठन का मूल्य उद्देश्य बुनियादी मानवीय मूल्य को बरकरार रखना है। वर्धा जिला का समाजिक आर्थिक विकास करना है। KJB संगठन का मूल्य उदेश्य बुनियादी मानवीय मूल्यों को बरकरार रखना है। वर्धा जिला का सामाजिक,आर्थिक विकास करना है। यह संगठन राजस्थान के शिखर जिला तथा महाराष्ट्र के वर्धा जिला में मुख्य रूप से किसान, खेतिहर मजदूर समुदाय के लिए काम करती हैं। प्राकृतिक संसाधन एवं मानव संसाधन का विकास करना इसका मुख्य कार्य है। यह संगठन वर्धा जिला के 201 गाँव तक अपनी पहुंच बना चुकी है। इस संगठन का यह उद्देश्य है कि दूर -देहात वाले अभाव ग्रस्त क्षेत्र तक अपनी पहुंच बनाना तथा उनके जीवन का उत्थान करना। यह संगठन मुख्य रूप से किसानों की दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए काम कर रही है। जब आरंभ में कमलनयन जमनालाल बजाज फाऊंडेशन की सस्टेनेबल टीम वर्धा के लोग की स्थिति के बारे में जानने के लिए विचार विमर्श कर रहे थे तो उनलोगो ने अवलोकन किया की वर्धा जिला की मुख्य व्यवसाय कृषि है। लोगो की आजीविका का मात्र यही एक साधन है। कृषि सूखा ग्रस्त इलाका है याहाँ पानी कि घोर संकट है। पानी के कमी की वजह से याहाँ के किसान अच्छी खेती नहीं कर पाते हैं। यहाँ के किसान आयेदिन आत्महत्या करते हैं। इस संगठन के काम करने के पहले याहाँ के किसान पारंपरिक तरीके से खेती करते थे। खेती के लिए पूर्णतः वर्षा जल पर निर्भर करते थे। समय से पोधों को पानी नहीं मिलने के कारण पैदावार अच्छी नहीं होती थी। यंहा के किसान की आय बहुत कम थी किसान कर्ज के बोझ से दबें होते थे। ये सारी स्थितियों को देखते हुए कमलनयन जमनालाल बजाज फाऊंडेशन आधुनिक तकनीक से पानी का संरक्षण किया। सस्टेनेबल एग्रीकल्चर करने के तरीके विकसित किए।

कमलनयन जमनालाल बजाज फाऊंडेशन जल के किए कुछ आधुनिक तकनीक विकसित किए है जो इस प्रकार है-लिफट सिंचाई, ड्रिप इरिगेशन, नदी नाला पुनर्जीवन, खेत तालाब, रिसाइकलिंग, खेत तालाब, रोक बांध, रेन वॉटर हार्वेस्टिंग, माइक्रो स्पिंकलर, बगबानी खेती, पानी की उपलब्धता के अनुसार खेती करना ,कम पानी वाले स्थान कमलनयन जमनालाल बजाज फाऊंडेशन जल संरक्षण के लिए 10 सालो में जो काम किए है वह इस प्रकार है -

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

135 नदी के नदी धारा को 207 किलोमीटर लंबाई तक पुनर्जीवन प्रदान किया है |

91 चैक डैम का निर्माण कराया है |

2737 कुंआ बनवाया है।

1941 कुओं का रिचार्ज किया है।

226 समूह कुआ बनवाया है।

1811 बोरी बंधान बनवाया है।

1763 नला पुल बनवाया गया है |

327 ड्रिपसिंचा

निष्कर्ष :

कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के जल संरक्षण से वर्धा जिला में रहने वाले निवासियों का सर्वागीण विकास हुआ है | कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के द्वारा बनाया गया जल स्रोत वर्धा जिला के लिए वरदान का काम कर रहा है| कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के द्वारा बनाए गये भौतिक संरचना जल संरक्षण के लिए एक अच्छी पहल है | इस भौतिक संरचना का लाभ वर्धा जिला में रहने वाले 50 प्रतिशत लोगो को बहुत आसानी से मिल पा रहा है | यशोदा नदी जो की वर्धा में खासकर देउली में बहती है | इस नदी के पुनर्जीवन से वर्धा जिला के कुछ गाँव को पानी बहुत आसानी से उपलब्ध हो पा रहा है | इस नदी का पानी जल प्राधिकरण वर्धा जिला में बड़ी-बड़ी टंकी बनाकर पाईप -लाईन के माध्यम से सभी लोगो के घरो में भेजा जा रहा है जिससे पीने के पानी तथा घरेलू कार्य के लिए पानी बहुत आसानी से मिल पा रहा है | वर्धा जिला में रहने वाले किसानों को अब कृषि करने के लिए पानी बहुत आसानी से मिल पा रहा है | समय से पानी मिलने के कारण अब किसान खुश महसूस करते हैं | अब यहाँ के किसानों को पर्याप्त मात्रा में खेती के लिए जल मिल पा रहा है जिसके कारण कम एकड़ भूमि में ज्यादा से ज्यादा मात्रा में फसल हो पा रही है | पानी की उपलब्धता के कारण अब किसान अपने खेतों में एक साल में 2-3 बार फसल उगा रहे है तथा किसान अब वैसी फसले जिसमे ज्यादा मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है जैस-चना ,गेहू, साग ,सब्ज़ी की खेती भी भरपूर मात्रा में कर रहे है | पानी समय से मिलने के कारण फसल की गुणवत्ता भी अच्छी हो रही है |कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के जल संरक्षण के बाद वर्धा जिला के किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है | अब यहाँ के किसान अपने बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने के लिए अच्छे स्कूल में भेज रहे है | अब वर्धा जिला के सभी गाँव की महिलाओ तथा किशोरियों को घर से बाहर से पानी नही लाना पड़ता है| बहुत आसानी से घरो में सीधे

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

पाईप-लाईन के माध्यम से नलों में पानी आ जाता है | वर्धा जिला में रहने वाले किसानों में आत्म-हत्या की स्थिति में सुधार आया है | किसानों की सामाजिक स्थिति में भी सुधार आया है |

लेकिन इसके विपरीत यह भी निष्कर्ष निकल रहा है कि कुछ गाँवों में कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के द्वारा जल संरक्षण के भौतिक संरचना का सकारात्मक प्रभाव नही पड़ रहा है | वो लोंग अभी भी इसके लाभ से वंचित है | कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के द्वारा बनाया गया भौतिक संरचना जिस किसान के खेतों से होकर नही गुजरता है उनको आज भी जल संकट की समस्या का सामना करना पड़ रहा है | वर्षा नहीं होने पर आज भी वर्धा जिला में रहने वालों को कोरोडोर खेती करनी पड़ती है | मतलब बिना पानी की खेती करना जिसके कारण अभी भी उनको पर्याप्त मात्रा में फसल नही उगा पाते है तथा फसल की गुणवता भी अच्छी नही होती है|बहुत मुश्किल से थोड़ी बहुत फसल उग पाती है जिससे उनका गुजारा हो जाता है|वर्षा नहीं होने के कारण किसान एक साल में एक फसल भी बहुत मुश्किल से उगा पाते हैं | जल की कमी की वजह किसानों को कपास की खेती करनी पड़ती है | किसान कम पानी की वजह से गेहूं,चना,साग सब्जी या ज्यादा पानी वाली फसल नहीं उगा पा रहे है | वर्षा नहीं होने पर किसान असहाय महसूस करते हैं | फसल अच्छी नहीं होने के कारण यहाँ के किसानों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है जिसके कारण वो अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में शिक्षा ग्रहण के लिए नहीं भेज पाते हैं | घर की महिलाओं को धूपकाल में पानी की तलाश में इधर -उधर भटकना पड़ता है | जिससे उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है | ज्यादा दिन के पानी पीने से उनकों जल जनित बीमारियों का सामना करना पड़ता है | कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के

वर्धा जिला में जल संरक्षण पर काम करने से वर्धा जिला के कुछ गाँव में निवास करने वाले लोगो में जल संरक्षण के बारे में बहुत ही जागरूकता है | गाँवों के सभी लोगो को इस बात की समझ है की जल को क्यों और कैसे बचाया जाए | यहाँ तक अशिक्षित उत्तरदाताओ को भी जल संरक्षण क्या है |रेन वाटर,हार्वेस्टिंग सिस्टम , सिचाई जैसे शब्द की अच्छी जानकारी थी| कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के द्वारा किये गये जल संरक्षण से वर्धा जिला में रहने वाले किसान बहुत ही संतुष्ट है | कमलनयन जमनालाल बजाज फाउंडेशन के जल संरक्षण के बाद वर्धा जिला में रहने वाले लोगो की सामाजिक ,आर्थिक तथा शैक्षणिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है |

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ ग्रन्थ सूची (References)

मिश्र,अनुपम.(2011).''आज भी खरे हैं तालाब''.प्रभात प्रकाशन,दिल्ली
वी, किरण.(2018).''पर्यावरण बोध''. स्टेज पब्लिकेशन,दिल्ली
राजगोपाल,आर () पर्यावरण एवं पारिस्थितीकी.''ऑक्सफ़ोर्ड हायर एजुकेशन
रंगा.राजन,महंग.(2018),''भारत में पर्यावरण के मुद्दे एक संकलन''. पियर्सन एजुकेशन इन इंडिया,दिल्ली
सिंह,धीरज.(2020).''जल और स्वच्छता'') कुरुक्षेत्र ग्रामीण विकास को समर्पित,66(12),52
भट्ट,राजेंद्र.(2019).'' स्वच्छ देश स्वच्छ समाज''.योजना विकास को समर्पित, 63(11),52
चौधरी, राजेंद्र.(2020).''पर्यावरण''. योजना विकास को समर्पित,64(1)41
चौबे, कृपाशंकर.(2009) '' पानी रे पानी''. आनंद प्रकाशन ,कोलकता
शर्मा, राम अवतार और यादव सुषमा.(2005).''जल : कल आज और कल'' .आकार बुक पब्लिकेशन, दिल्ली

ई-संदर्भ सूचि (E-References)

https://www.paanifoundation.in
https://learn.eartheasy.com/guides/45-ways-to-conserve-water-in-the-home-and-yard
https://apnahindi.com/essay-conservation-of-water-hindi

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language